

प्रो. नीरज खरे

जन्म और शिक्षा : 1 दिसम्बर, 1969 को अजयगढ़, जिला-पन्ना (मध्यप्रदेश) में जन्म। यहीं विद्यालयीन शिक्षा। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.) से भौतिकी में एम. एससी. के बाद हिन्दी में एम.ए. और पीएच.डी., संचार एवं पत्रकारिता में स्नातक और स्नातकोत्तर। यहीं कुछ वर्ष अस्थायी पद पर अध्यापन। 2005 से बी. एच. यू. के हिंदी विभाग में अध्यापन, इस समय प्रोफेसर। मुंशी प्रेमचंद स्मारक एवं शोध संस्थान (लमही) के कार्यकारी समूह के समन्वयक का अतिरिक्त दायित्व।

प्रकाशन / आलोचना पुस्तकें : 'बीसवीं सदी के अंत में हिन्दी कहानी' (2004), 'कहानी का बदलता परिदृश्य' (2018), 'आलोचना के रंग' (2018) और 'उन्मुक्त रास्तों पर हिन्दी कहानी' (2025) सम्पादित पुस्तकें : प्रेमचन्द शोध संस्थान, लमही (वाराणसी) में बतौर सदस्य तीन वर्ष कार्य करते हुए 'प्रेमचन्द और हमारा समय' (2021) किताब का सह-संपादन। बीसवीं सदी की प्रतिनिधि कहानियों के एकल मूल्यांकन की संपादित किताब 'हिन्दी कहानी वाया आलोचना' (2022)। इसके साथ ही स्वयं प्रकाश की प्रतिनिधि कहानियों का संकलन 'एक कौड़ी दिल से' (2020) और 'मार्कण्डेय : चुनी हुई कहानियाँ' (2025) का संपादन।

हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में निरन्तर लेख/समीक्षाएँ और संपादित पुस्तकों में कुछ लेख प्रकाशित। कथा आलोचना में विशेष लेखन। पहल, परिकथा, रचना समय, अक्षर पर्व, लमही आदि में कविताएँ और 'पाखी' के प्रेम विशेषांक में एक कहानी प्रकाशित। सागर में कुछ वर्ष पत्रकारिता।

पुरस्कार / सम्मान : 'आलोचना के रंग' पुस्तक की पांडुलिपि पर साहित्य भंडार तथा मीरा फाउन्डेशन, इलाहाबाद का 'मीरा स्मृति पुरस्कार-2017', आलोचना कर्म के लिए स्पंदन संस्था, भोपाल का 'स्पंदन आलोचना सम्मान-2022' और रुद्रादित्य प्रकाशन समूह द्वारा श्रेष्ठ कृति सम्मान के अंतर्गत 'उन्मुक्त रास्तों पर हिन्दी कहानी' किताब पर 'मलयज स्मृति आलोचना सम्मान-2024'।

सम्प्रति : प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी - 221 005

मोबाइल : 9450252498

ईमेल : neerajkharebhu@gmail.com